ear : 9
ssue : 33 (Part-II)
anuary-March 2019
www. chintanresearchjournal.com
mpact Factor : 4.012

International Refereed

चिन्तन Chintan Research Journal

रिसर्च जर्नल

(कला, साहित्य, मानविकी, समाज–विज्ञान, विधि, प्रबंधन, वाणिज्य एवं विज्ञान विषयों पर केंद्रित)

(Indexed & Listed at : Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest . U.S.A.)
(Indexed & Listed at : Copernicus, Poland)
(Indexed & Listed at : Research Bib, Japan)
(UGC Approved List No. 41243)

संपादक

आचार्य (डॉ.) शीलक राम

याचन जीवन सुखं जीवेत

आचार्य अकादमी
भारत
ISO 9001-2008

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
website : www.chintanresearchjournal.com
Impact Factor : 4.012

यतेमहि स्वराज्ये
ISSN : 2229-7227

International Refereed

चिन्तन

अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित रिसर्च जर्नल

(कला, साहित्य, मानविकी, समाज-विज्ञान, विधि, प्रबंधन, वाणिज्य एवं विज्ञान विषयों पर केन्द्रित)

(Indexed & Listed at : Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest. U.S.A.)
(Indexed & Listed at : Copernicus Poland)
(Indexed & Listed at : Research Bib, Japan)
(Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJIND EX))
(Indexed & Listed at : UGC Journal List No.41243)

वर्ष : 9 अंक : 33(II)
विक्रमी सम्वत् : 2076
जनवरी-मार्च 2019

संपादक
आचार्य (डॉ०) शीलक राम

पावन जीवन सुखी जीवन

आचार्य अकादमी, भारत

ISO 9001 : 2008

वर्तमान महिला पत्रकारिता और महिला पत्रकार — 119-123
डॉ. ओमप्रकाश

देह का प्रश्न और समकालीन हिन्दी महिला उपन्यासकार — 124-127
डॉ. ओमप्रकाश

Exploring The Different Meanings of Veil in The *Purdah* Poems of Imtiaz Dhanker — 128-132
Shubh Lala

हिन्दी पत्रकारिता की भाषा और उसका बदलता चरित्र — 133-135
कुलदीप सिंह

Earthquake Studies In Himalayan — 136-140
Dr. Amit Kumar, Neelu Goswami

Compensation to Victim from Wrongdoer in India — 141-147
Jyoti

The Suggestions of The Farmers to Make Effective Water Conservation Campaig (The Farmers Perspective of Haryana) A Study — 148-152
Raj Kumar

आधुनिक नारी सशक्तिकरण : वास्तविकता/मिथ्या? — 153-156
डॉ. पुष्पा

Ecofeminism in Temsula Ao's *Laburnum for My Head* — 157-160
Pushpendra

प्राचीन एवं नवीन लोक कथाओं का आधुनिक प्रासंगिकता में तुलनात्मक अध्ययन — 161-165
राजश्री

Impact of HRM Practices on Organisational Performance — 166-172
Diksha Sharma

भारत के पश्चिमोत्तर क्षेत्र में उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र पटियाला द्वारा शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार हेतु किए जा रहे प्रयास-एक अवलोकन — 173-179
गुरप्रीत सिंह

भारतीय संगीत में ख्याल गायन शैली का उद्गम — 180-182
जगदीश कुमार

शतपथ ब्राह्मण का काल, कर्तृत्व और नामकरण — 183-187
कुसुम

Terrorism — 188-192
Mukul Gupta

Management of Working Capital in Indian Cement Industry — 193-202
CA Pranav Bansal

Female Solidarity against Pervasive Patriarchy : A Study of Anita Nair's Ladies Coupe — 203-205
Krishan

Analysis the Maximum Pressure of both feet in sportsmen participating in Volleyball, Hockey, Long Distance Runner and non sports person — 206-211
Sunil Dhanda

Women in Haryana Legislative Assembly — 212-218
Anukriti

Dying Declaration and its evidentiary value — 219-223
Miss Sonu

Buddhist Centres in the East Coast of Andhra Pradesh: Special Reference to Krishna District — 224-233
Dr. Palas Kumar Saha

International Refereed 'चिन्तन' अन्तरराष्ट्रीय रिसर्च जर्नल (ISSN: 2229.7227)
UGC List No.41243 वर्ष 9, अंक 33(II) (पृ.सं. 119-123)
Impact Factor : 4.012
विक्रमी सम्वत्: 2076 (जनवरी-मार्च 2019)

वर्तमान महिला पत्रकारिता और महिला पत्रकार

डॉ॰ ओमप्रकाश
एसोसिएट प्रोफेसर
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग
आर॰के॰एस॰डी॰ कॉलेज, कैथल (हरियाणा)

आलेख सार
आज हम इक्कीसवीं सदी के मुहाने पर खड़े हैं। ऐसे में पत्रकारिता के क्षेत्र में जो सबसे महत्त्वपूर्ण बात हुई है, वह है लड़कियों का बड़ी संख्या में इस क्षेत्र में आना ।कम से कम दिल्ली जैसे शहर में काफी संख्या में लड़कियाँ इस क्षेत्र में आ रही हैं । एक जमाना था जब पत्रकारिता के क्षेत्र में लड़कियों का प्रवेश वर्जित सा था। लेकिन समय के साथ सब कुछ बदल गया, अब ऐसा नहीं है ।

-शब्द : यौन-हिंसा, महकमा, साक्षात्कार, बदस्तूर, मेहरबानी ।

आज भारतीय महिलाओं की लेखन कला को निरंतर विस्तार मिल रहा है । अब वे घर से बाहर निकलकर उन विषयों पर भी लेखन करने लगी है, जो पहले उनके लिए अछूत समझे जाते थे । यौन-हिंसा, बलात्कार एवं छेड़छाड़ जैसे विषयों पर लेखन करते समय उनकी भाषा आक्रामक तेवर लिए हुए होती है। वरिष्ठ पत्रकार ममता कालिया 'स्त्री के साथ सुलूक' नामक लेख में लिखती हैं कि 'अभी कुछ वर्ष पूर्व तक भारतीय स्त्री का जीवन एक बंद किताब की तरह था । अपने अंतर्जगत के सशक्त, अशक्त और विभक्त सकारों के प्रति वह स्वयं अचेत थी, उतना ही समाज का हर महकमा, रोजाना स्त्री की प्रताड़ना की खबरें समाज में चेतना की जगह सनसनी और जागरूकता की जगह जुगुप्सा पैदा कर रही हैं । ......आज समाज की इस स्थिति को एक रंगीन खबर मान लिया है - जीवन चाहे कितना भी आधुनिक हो जाए, घर की औरत आज भी अपनी महाप्रयोजन, मालिन, आया, धोबिन, भंगिन, नर्स, चपरासी और दासी है। ये सब चतुर्थ श्रेणी की भूमिकाएँ हैं और इन्हें अदा करते-करते वह स्वयं अपना तेज धूमिल कर बैठती है। ऐसे में जड़ता एक बड़ी सुविधाजनक, सहज और स्वाभाविक प्रवृत्ति की तरह पनप सकती है । इस जड़ता को बड़े मोहक और रंगीन तरीके से 'ग्लोरिफाई' किया है महिला पत्रिकाओं ने, जिन्होंने स्त्री सरोकार के एकदम तंग पैमाने खींच लिए ।'

हिन्दी पत्रकारिता और स्त्री एक दूसरे के लिए कभी अनजाने नहीं रहे हैं । हिन्दी पत्रकारिता के प्रारंभिक काल से ही स्त्रियाँ हिन्दी पत्रकारिता से जुड़ी रही हैं ।भले ही पत्रकार के रूप में सघन पत्रकारिता में उनका प्रवेश न हुआ हो, लेकिन स्वतंत्रता आंदोलन के चलते स्त्रियों में शिक्षा और जागरूकता की लौ जली, जिससे हिन्दी पत्रकारिता के विभिन्न क्षेत्रों में उनकी उपस्थिति दर्ज होती रही । मुट्ठीभर शिक्षित अभिजात्य वर्ग की महिलाओं का पत्रकारिता के क्षेत्र से जुड़ने का लक्ष्य भले ही कुछ रहा हो, लेकिन उससे पत्रकारिता के क्षेत्र में उनके हस्ताक्षरों को धूमिल नहीं किया जा सकता । भारतीय राष्ट्रीय जागरण की सामाजिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट करते हुए समाजशास्त्री ए॰ आर॰ देसाई ने लिखा है, 'राजनीति में स्त्रियों का सीधा प्रवेश, विशेष रूप

हो, वहीं महिलाओं ने बराबरी या समकक्षता पाने के लिए अत्यंत संघर्ष किया है । आज आजादी का स्वप्न नारी ने भी देखना शुरू कर दिया है ।

पत्रकारिता का कार्य अत्यन्त संवेदनशील है क्योंकि इसमें विभिन्न प्रकार के जोखिम या चुनौतियाँ हैं फिर भी महिलाओं ने पुरुष पत्रकारों की भाँति रिपोर्टिंग को अपना व्यवसाय बना लिया है । महिलाएँ पत्रकारिता के उन क्षेत्रों में भी घर कर चुकी है जहाँ कभी पुरुषों का आधिपत्य होता था ।

वास्तव में पूरे समाज का नजरिया भोगवादी है । आधुनिक दुनिया कही जाने वाली नारी को समझने, परखने की आवश्यकता महसूस नहीं की जा रही । हजारों-लाखों औरतें घर रूपी पिंजरे में कहीं कैद या कारागृह में शारीरिक, मानसिक यातना सहने पर मजबूर हैं । सिक्के के दूसरे पहलू की तरह पत्रकारिता जगत से जुड़ी महिलाओं का दूसरा पहलू अत्यन्त निराश करने वाला है क्योंकि समाज का पूँजीपति वर्ग, तथाकथित प्रमुख सम्पादक जो पत्रकारिता के क्षेत्र में 'स्वयंभू' बने हुए हैं महिला पत्रकारों को आत्मनिर्भर बनने देना नहीं चाहते । महिला पत्रकारों के आत्मसम्मान को कुचलने की घटनाएँ यत्र-तत्र होती रहती हैं, कानूनों के बावजूद महिला पत्रकारों को भयाक्रान्त स्थितियों में अपना कार्य करना पड़ता है । उन्हें कदापि नहीं भूलना चाहिए कि भारतीय समाज में बदलाव है, यद्यपि अभी तक पुरुषों का आधिपत्य कायम है, फिर भी महिलाओं को अपना व्यवहार संतुलित बनाए रखने की नितान्त आवश्यकता है अन्यथा वह उन्मुक्तता के चक्कर में पुरुषों द्वारा बनाई गई दुनिया में साजिश का शिकार हो सकती है । अभी तक स्त्री की आजादी मात्र भ्रम है । विवाह ही स्त्री का अंतिम लक्ष्य नहीं है, वहाँ भी कई स्वप्नों का भंजन होना आम बात है। सामंती समाज में आजाद होती नारी की छवि पर कई प्रश्नचिह्न लगाए जा सकते हैं । आज वैश्वीकरण के दौर में स्त्री की छवि बाजार के शिकंजे में कैद है । महिला पत्रकारों को टी॰ वी॰ स्क्रीन पर दिखाकर दर्शक समाज को आकर्षित करना अच्छा कारोबार दिलवाना है फिर भी स्त्री पत्रकारों को यह निश्चित करना है कि देश की आजादी के साथ-साथ वह विचार और चेतना से जागृत और स्वतंत्र हों ।

संदर्भ

१. राजकिशोर, 'समकालीन पत्रकारिता मूल्यांकन और मुद्दे', पृ॰ 151
२. ए॰ आर॰ देसाई, 'भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि', पृ॰
३. 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान', अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष विशेषांक', 1976
४. उपरिवत्, अंक 1976
५. 'माया' जून 1985
६. उपरिवत्, मई 1984
७. उपरिवत्, जुलाई, 1985
८. रविवार, अप्रैल 1986-87
९. उपरिवत्, 6 अक्तूबर 1985
१०. 'दिनमान', 12 मई 1985, पृ॰ 25, 31-33
११. 'सरिता', फरवरी 1983
१२. उपरिवत्, सितंबर 1985
१३. 'धर्मयुग', 11 नवंबर 1979
१४. 'मानुषी' अंक 22, 1984
१५. नॉलीन हेजर, कार्यकारी निदेशक, यूनिफेम
१६. 'हंस', 2001